विचार बिन्दु

दुरात्मा के लिए देश भक्ति अंतिम शरण है। –जॉन्सन

जनता की समस्याओं से बेखबर सरकार

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में सरकार से यह अपेक्षा रहती है कि वह जनता की समस्याओं को अच्छी तरह समझे और उनके निराकरण का निरंतर प्रयास करे। वर्तमान समय में इसका विपरीत होता दिखाई देता है। जनता की समस्याओं से सरकार का कोई संबंध नहीं रहा है और सरकार केवल घोषणा मात्र करके अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेती है। आम जनता दिन–प्रतिदिन समस्याओं से जूझती है किन्तु उसके कानों पर जूं तक नहीं रेंगती। इसे स्पष्ट करने के लिए कुछ उदाहरण देना उपयुक्त होगा।

वर्षा का मौसम प्रारंभ हुआ ही है किंतु सड़कें जगह–जगह पर टूट गई हैं और पानी के निकास की समुचित व्यवस्था न होने से सड़क पर चलते समय यह पता नहीं रहता कि पानी के नीचे खड्डे तो नहीं है। वाहन चालक अथवा पैदल व्यक्ति दुर्घटनाग्रस्त होने की आशंका से ग्रस्त रहता है। वर्षों से यह समस्या चली आ रही है। बरसात का पानी जमा हो जाता है और घंटों तक वह यातायात को बाधित कर देता है। दुनिया देश के कई शहरों में देखा गया है कि चाहे कितनी भी बरसात हो, पानी के निकास की व्यवस्था इतनी अच्छी होती है कि कुछ ही समय बाद सड़कों पर पानी नहीं रहता। इससे जहां आवागमन सुगमता से चलता रहता है, वहीं सड़कें भी लंबे समय तक अच्छी बनी रहती हैं। इस छोटी सी समस्या का, पता नहीं क्यों, तथाकथित उच्च शिक्षित इंजीनियर अभी तक समाधान नहीं कर पाए हैं।

वर्षा ऋतु में सड़क के टूटने से कितनी दुर्घटनाएं होती हैं, यह जानकारी सरकार द्वारा सार्वजनिक की जाए, तो वह चौंकाने वाली होगी। सड़कें यदि वर्षा के पहले ठीक कर दी जाएँ और पानी के निकास की उचित व्यवस्था हो तो कोई कारण नहीं कि जयपुर एवं अन्य शहरों में पानी के भराव की और सड़कों के टूटने की समस्या का निराकरण न हो सके।

इसी प्रकार, प्रतिवर्ष नालों की सफाई समय पर न होने की समस्या मीडिया द्वारा सामने लाई जाती रही है किंतु स्थिति ऐसी होती है 'जैसे ढाक के तीन पात'। नाले सामान्यतया मॉनसून आने के बाद नालों की सफाई का काम प्रारंभ किया जाता है। नाले से निकाली गई गंदगी के ढेर नालों के पास कई दिनों तक वहां से नहीं उठाए जाते, जिससे वह पुनः बह कर नालों में चली जाती है।

जनता की समस्याओं से सरकार को कोई वास्ता नहीं है, इसका एक और उदाहरण शिक्षा विभाग ने प्रस्तुत किया है। शिक्षा विभाग के द्वारा इस बार सभी सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों को निशुल्क यूनिफार्म वितरण की घोषणा की गई थी। सत्र प्रारंभ होने के बाद भी अभी तक लगभग 70 लाख बच्चों के लिए यूनिफॉर्म उपलब्ध होना तो दूर, इसके लिए कपड़ा क्रय करने की प्रक्रिया भी पूरी नहीं हो पाई है। ऐसी स्थिति में अभिभावकों के पास अपने स्वयं के स्तर पर यूनिफॉर्म बनवाने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं बचा है। आधा सत्र पूरा होने के बाद यदि यूनीफॉर्म दी जाएगी तो उसका उद्देश्य कितना पूरा हो पाएगा, यह संदेहास्पद है।

इसी तरह, कोरोना के कारण बच्चों के शैक्षणिक स्तर में हुए हुई कमी को पूरा करने की दृष्टि से राजस्थान शैक्षिक अनुसंधान परिषद के द्वारा कई प्रकार की शैक्षिक सामग्री तैयार कराई गई जिनमें वर्कशीट भी सम्मिलित है। वर्कशीट एवं अन्य सामग्री पर्याप्त संख्या में अब तक विद्यालयों में पहुंच जानी चाहिए थी। वास्तविकता यह है कि, यह अभी तक किसी भी विद्यालय में नहीं पहुंचाई गई है। कुछ स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा प्रायोगिक रूप से कुछ सरकारी विद्यालयों में इसको प्रारंभ करने का प्रयास किया गया तो उन्हें अपने ही स्तर पर इन वर्कशीट की व्यवस्था करने हेतु बाध्य होना पड़ा। सरकार को यह ध्यान रखना होगा कि यदि वह वास्तव में जनता के हित में कोई घोषणा करती है, तो उसके लिए आवश्यक व्यवस्था समय पर की जाना सुनिश्चित करे, अन्यथा उसका उद्देश्य पूरा नहीं होगा। साथ ही इस पर किया गया व्यय भी व्यर्थ ही जाएगा। सरकार में किसी को इससे किसी को कोई लेना–देना नहीं कि भारत की जनता से वसूल की गई धनराशि किस प्रकार से बर्बाद होती है?

इस स्थिति से यह स्पष्ट होता है कि समय पर कार्य पूरा होने के लिए किसी की जिम्मेदारी एवं जवाबदेही तय नहीं है। अधिकारी गण काम न करके भी न केवल नौकरी में बने रहते हैं बल्कि पदोन्नित भी प्राप्त करते रहते हैं। कार्य के प्रति उनकी उदासीनता, जनता के लिए कितनी कष्टकारी होती है, यह अनुभव करने के उन्हें कभी–कभार, सामान्य नागरिक के रूप में सरकारी कार्यालयों में जाकर रखकर अनुभव करने का प्रयास करना चाहिए।

कुछ वर्ष पूर्व स्वच्छ भारत अभियान प्रारंभ होने के बाद भी जयपुर शहर में गली–गली में गंदगी के ढेर पढ़े हुए हैं। इनके कारण प्रतिवर्ष अनेक प्रकार की बीमारियां होती हैं जिनके इलाज के लिए न केवल नागरिकों को अपनी जेब से धनराशि खर्च करनी होती है और परेशानी उठानी पड़ती है, अपितु सरकार को भी सरकारी अस्पतालों के माध्यम से इलाज करने पर बहुत बड़ी धनराशि इस पर व्यय करनी पड़ती है। इन सब से बचा जा सकता है, यदि स्थानीय निकाय समय–समय पर सभी मोहल्लों–गलियों में गंदगी के ढेर को समय पर निस्तारित करें। आज के वैज्ञानिक युग में यह पता करना कठिन नहीं है कि प्रतिदिन कितना ठोस कचरा एक शहर में उत्पादित होता है एवं उसके निस्तारण के लिए क्या एवं कैसी व्यवस्था है? क्या हम सरकारी अधिकारियों से इतनी भी अपेक्षा नहीं कर सकते कि वह गंदगी को तत्काल उपयुक्त साधनों से निर्धारित स्थान तक ले जाएं।

अधिकारियों को चाहिए कि वह सामान्य नागरिकों से संपर्क बनाए रखें एवं एक समानुभूति का भाव रखते हुए अपने विभाग से संबंधित समस्याओं को कम से कम करने हेतु व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाएं। यदि जनता की समस्याएं दूर होंगी और उनके काम सरलता से होंगे तो निश्चित रूप से न केवल जनता को राहत मिलेगी, अपितु सरकार की छवि एक ऐसी सरकार की बनेगी जो जनता की समस्याओं से बेखबर नहीं है।

पार्किंग व्यवस्था की भी हालत बेहाल है पूरे शहर में सड़कों की चौड़ाई का लगभग आधा अथवा दो तिहाई भाग अनधिकृत रूप से पार्किंग किए गए वाहनों में चला जाता है। साथ ही, दुकानदारों द्वारा अपने निर्धारित सीमा से बाहर सामान का प्रदर्शन करने से स्थिति और विकट हो जाती है। क्या यह संभव नहीं कि गहरी पीली रेखा सड़क के दोनों और खींच ली जाए और उसके बाहर जैसे कोई वाहन दिखे उसे तत्काल क्रेन के द्वारा वहां से हटवा लिया जाए। जो लोग निर्धारित पार्किंग व्यवस्था का उपयोग करना भी चाहते हैं तो वह भी सही जानकारी के अभाव में ऐसा नहीं कर पाते। आज, किसी को नहीं पता कि कहां वाहन पार्क किए जा सकते हैं और कहां नहीं? कभी खाली सड़कों से वाहनों को उठा लिया जाता है और अधिकांश समय अत्यंत भीड़ भरी सड़कों पर अनधिकृत वाहनों के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की जाती। व्यापारियों के वाहन दिन भर वहीं दुकान के समक्ष बाहर खड़े रहेंगे तो ग्राहकों के वाहन कहां पर पार्क किए जाएंगे, इस बारे में कोई ध्यान नहीं दिया जाता। इसका नुकसान दुकानदारों को ही अधिक उठाना पड़ता है। शहर में पार्किंग स्थान पर्याप्त मात्रा में बनाने की बात कई वर्षों से की जा रही है किंतु अभी तक इस बारे में कोई ठोस प्रगति नहीं हुई है। वाहनों की खरीद पर को नियंत्रित करने की कोई व्यवस्था नहीं है। कहने को तो, वाहनों के पंजीकरण के समय वाहनों को सड़क पर पार्क नहीं करने से संबंधित नियम बनाया हुआ है और एक नए वाहन के पंजीकरण के समय वाहन मालिक से एक प्रमाण पत्र लिया जाता है कि उसके पास अपने वाहन को पार्क करने के लिए उसके मकान में पर्याप्त स्थान है। इसके बावजूद लगभग 80 प्रतिशत वाहन सड़कों पर ही रहते हैं। उनके द्वारा झूठे शपथ पत्र दिया जा रहे हैं जिन पर कोई ध्यान नहीं देता, क्योंकि सरकार को जन समस्याओं को हल नहीं करना है अपितु हल करने का दिखावा करना है।

आश्चर्य तो यह है कि सरकार नागरिकों के समस्याओं को दूर करने के बजाय उनके लिए कई प्रकार की नई–नई समस्याएं अवश्य खड़ी कर देती हैं। उदाहरण के लिए, हाल ही में विवाह के पंजीकरण के संबंध में यह आदेश पारित किया गया कि नवविवाहित लड़के और लड़की दोनों का जन आधार धार कार्ड जब तक नहीं होगा तब तक उनका विवाह का पंजीकरण नहीं किया जा सकता है। यह उल्लेखनीय है कि जन आधार कार्ड केवल राजस्थान में ही लागू होता है और अन्य किसी राज्य में इस प्रकार की कोई अवधारणा नहीं है। हमारे एक परिचित के पुत्र के विवाह के बाद अनेक प्रयास के बावजूद संबंधित नगर निगम में इस आधार पर पंजीकरण से इंकार कर दिया गया कि वधू का आधार कार्ड नहीं था। वह चूंकि उत्तर प्रदेश की निवासी थी, उसका जन आधार कार्ड बन ही नहीं सकता था। पूरे देश में जब आधार कार्ड को पहचान पत्र की तरह स्वीकार कर लिया है तो फिर राजस्थान में सामान्य कार्यों के लिए जन आधार कार्ड की अनिवार्यता बेतुकी लगती है। स्पष्ट है, जिन लोगों ने भी आदेश जारी किया उन्होंने वास्तविकता को जानने की और पता करने की कोई कोशिश नहीं की। क्या वे यह मानते थे कि राजस्थान में प्रत्येक शादी केवल राजस्थान के ही लड़के अथवा लड़की के बीच में होगी? यदि नहीं, तो इस प्रकार का आदेश जारी करने से जनता को कितनी बड़ी परेशानियां हुई हैं उसकी कल्पना उन्होंने क्यों नहीं की? इस आदेश से विशेषकर उन लोगों को परेशानी हुई जिनको विवाह प्रमाण पत्र बनवाना था। हमारे परिचित ने तो यही अच्छा समझा कि वह उत्तर प्रदेश में जाकर उस शहर से विवाह प्रमाण पत्र बनवा ले जहां की लड़की थी। वहां पर यह विवाह प्रमाण पत्र एक ही दिन में बना दिया गया क्योंकि वहां पर जन आधार कार्ड की अनिवार्यता नहीं थी। मीडिया ने यह बात उठाई तो फिर अंततः सरकार को यह आदेश वापस लेना पड़ा, किंतु प्रश्न यही है कि ऐसा बेतुका आदेश जारी ही क्यों हुआ?

उदयपुर की नृशंस हत्या की घटना के बाद इन्टरनेट पर कई दिन तक रोक रही जिसके कारण आम जनता को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। यह तो वैसे ही हुआ जैसे बालों में जूं होने पर सिर ही काट दिया जाय।

सरकार वास्तव में जनसमस्याओं के प्रति यदि संवेदनशील है और उनका निराकरण करने हेतु इच्छुक है तो बहुत सरल तरीका अपना सकती है। कोई भी नया आदेश जारी करने से पूर्व उसकी व्यवहारिकता एवं उसका नागरिकों पर होने वाले प्रभाव का आकलन करने हेतु कुछ स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं के माध्यम से इसका परीक्षण करा लिया जाए। यदि एक सामान्य व्यक्ति की तरह ऐसा करने में वे सफल हो जाते हैं और उन्हें कोई परेशानी नहीं होती तो फिर उसे पूरे राज्य में लागू करना चाहिए। अधिकारियों को चाहिए कि वह सामान्य नागरिकों से संपर्क बनाए रखें एवं एक समानुभूति का भाव रखते हुए अपने विभाग से संबंधित समस्याओं को कम से कम करने हेतु व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाएं। यदि जनता की समस्याएं दूर होंगी और उनके काम सरलता से होंगे तो निश्चित रूप से न केवल जनता को राहत मिलेगी, अपितु सरकार की छवि एक ऐसी सरकार की बनेगी जो जनता की समस्याओं से बेखबर नहीं है।

वर्तमान स्थितियों और अनुभव के आधार पर तो यही कहा जाएगा कि सरकार आम नागरिक की समस्याओं से बिल्कुल बेख़बर है।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

नव–सामंतों का अहंकार एवं अनुशासनहीनता

भारतीय प्रशासनिक एवं पुलिस सेवा के नव–सामंतों (अधिकारियों) का अभिमान जनता को सरेआम रोज अपमानित कर रहा है। आजादी के आजादी के बाद जब राजा का चयन जनता के मतदान से होने लग गया फिर भी जनता विवश है, सचिवालय और सरकारी कार्यालयों में अपमानित होने के लिए। जनता का सौभाग्य केवल यह है कि उसके मतों से चुना हुआ राजा (राजनीतिज्ञ) जरूर उसको अपमानित नहीं कर रहा है। आम जनता के लिए राजनीतिज्ञों के द्वार 24 घण्टे खुले हैं । राजनीतिज्ञ को पता है हर पाँच वर्ष में उसे जनता की महरबानी की आवश्यकता होती है।

तकलीफ की वजह राजनीतिज्ञ नहीं उसके अधीनस्त काम करने वाले अधिकारी है। जिन्हे हर पाँच वर्ष में किसी प्रकार की परीक्षा से नहीं गुजरना है। व्यवहार में सभी सरकारी आदेश अधिकारियों के हस्ताक्षर से ही जारी होते है। वर्तमान व्यवस्था में नव–सामंत स्वाभाविक रूप से ताकतवर हैं। यही ताकत उनके अभिमान का कारण बन जाती है। इन्होने अपने लिए सर्विस रूल्स ऐसे बना रखे हैं कि खुले आम रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों पकड़े जाने के बावजूद भी दो–चार वर्षो में पुनः उसी कुर्सी पर नजर आते हैं। जनता को अपमानित करना तो जैसे कोई अपराध ही नहीं है। राजकीय सुविधाओं का दुरूपयोग तो इनका जन्मसिद्ध अधिकार हो गया है।

भारतीय प्रशासनिक एवं पुलिस सेवा के अधिकारियों ने देश में एक ऐसा वातावरण बनाया कि जैसे यह मुल्क इन्ही के बलबुते पर चल रहा है। इस खेल में मीडिया का भी इन्हें भरपूर सहयोग मिला है। समस्त असफलताओं एवं गलतियों के लिए राजनीतिज्ञों को जिम्मेदार ठहराने में तो जैसे इन्होंने पीएच.डी. कर रखी है। राजनीतिज्ञों की इमेज को खराब एवं कमजोर करने में नव–सामन्तों की प्रभावी भूमिका है। जब कि धरातल पर सच्चाई का एक मामूली उदाहरण पर्याप्त है कि किसी आपातकाल में आप दिन में 12 बजे जिलाधीश को फोन करें, फोन उठाने की सम्भावना जीरो है। जबकि रात्रि में 12 बजे भी किसी विधायक या सांसद को फोन करो, फोन उठाने की सम्भावना पूरी है।

अभी हाल ही में वो भी कहीं दूर दराज़ नहीं देश की राजधानी दिल्ली में एक आई.ए.एस. अधिकारी एवं उनकी आई.ए.एस. पत्नी ने अपने पालतू कत्ते को स्टेडियम में घुमाने के लिए निर्धारित समय से पहले सांय 7 बजे स्टेडियम को बन्द करने के आदेश निकाल दिये। अपने अहंकार में सैकड़ों खिलाड़ियों के खेल को नजरअन्दाज कर दिया। आभार है उन राजनीतिज्ञों का जिन्होंने तत्काल सत्ता में मदहोश दोनों अधिकारियों का स्थानान्तरण क्रमशः लद्दाख और अरूणाचल प्रदेश कर दिया। परन्तु प्रायः इस प्रकार के अहंकार का इलाज समय पर नहीं किया जाता है। इसलिए यह रोग लगातार बढ़ रहा है।

डॉ. कैलाश सोडाणी

- **आज खुले आम रिश्वत लेते हुए पकड़े जाने के बावजूद भी अधिकारी दो-चार वर्षो में पुनः उसी कुर्सी पर नजर आते हैं**

आप इनकी गाड़ियों को अमूमन नो पार्किंग जॉन में ही पायेंगे। चौराहों पर लाल बत्ती इनके लिए नहीं होती है। सिनेमाघर हो या अजायबघर नव–सामन्तों का बिना टिकिट प्रवेश, फाइव स्टार होटल में भोजन व्यवस्था आदि अनेक तरह की सुविधाएं फ्री में प्रदान कराना जैसे स्थानीय पुलिस की संवैधानिक जिम्मेदारी है। सर्किट हाऊस में आवंटित रूम में प्रायः इनके ड्राइवर एवं गनमेन ही ठहरते है। साहब तो किसी फार्म हाऊस या कोठी की शोभा बढ़ाते हैं, जहाँ श्रेष्ठ सुविधाओं के साथ–साथ निजता भी मिलती है। यह निजता इनके कार्य–कलापों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। शहर पुलिस की कमी से परेशान है परन्तु अधिकारियों के घरों पर 5–10 कांस्टेबल स्थायी रूप से सेवा में लगे हुए हैं।

आजकल नव–सामंतों को सामंतशाही की समयावधि की समाप्ति के पश्चात् राजनीति में प्रवेश का बुखार चढ़ रहा है। सनद रहे कि आपका यह कोमल शरीर राजनीति की कठोर डगर के लिए नहीं बना है।

हमारक प्रजातंत्र की परिपक्वता के शिखर पर नव–सामंतों का यह अभिमान, अहंकार, भ्रष्टाचार, सरकारी सुविधाओं के दुरूपयोग की आदत एवं प्रजातंत्र के असली मालिक जनता को अपमानित करने की मानसिकता सरासर गलत है। इलाज की तत्काल आवश्यकता है। अन्यथा प्रजातंत्र ही अर्थहीन हो जायेगा। निःसंदेह भारतीय प्रशासनिक एवं पुलिस सेवा में चयनित अधिकारी प्रतिभा के धनी है, उनकी मेहनत एवं लगन स्वागत योग्य है। फिर आखिर गड़बड़ कहाँ हुई है? चयन के पश्चात् मंसूरी के जिस संस्थान में प्रशिक्षण दिये जाने की व्यवस्था है, वहाँ कोई कमी जरूर है। शायद अंग्रेजों के राज की परम्पराएं अभी भी जीवित हो। संस्थान को अपना पाठ्यक्रम बदलना होगा। नव–सामंतों के जेहन में राष्ट्रीयता एवं राष्ट्रप्रेम का भाव उतारना होगा। वहीं भाव इनके अहंकार को समाप्त करेगा। साथ ही राजनीतिज्ञों एवं मीडिया को भी मजबूती से अपनी भूमिका निभानी होगी।

डॉ. कैलाश सोडाणी,
पूर्व कुलपति,
एमडीस वि. वि अजमेर

सिरोही में फौजी ने 2100 पेड़ वितरण कर मनाया जन्मदिन

अनिल फौजी व उनकी टीम ने पेड़ लगाओ जीवन बचाओ मुहिम के तहत पांच हजार से अधिक पेड़ लगाये।

पाटन, (निसं)।उपखंड क्षेत्र की ग्राम पंचायत सिरोही में जनहितेषी संस्था के संस्थापक अनिल फौजी ने अपने जन्मदिन पर अपने निवास स्थान पर 2100 पेड़ वितरण कर जन्मदिन मनाया। अनिल कस्वा भारतीय तिब्बत सीमा सुरक्षा बल में कार्यरत हैं अपने देश की सेवा के साथ साथ प्रकृति की सेवा में भी तत्पर रहते हैं ।

वे देशवासियों से निवेदन करते हैं कि वो अधिक से अधिक पेड़ लगाएं। जनहितेषी संस्था द्वारा पेड़ लगाओ जीवन बचाओ मुहिम के तहत 5 हजार से अधिक पेड़ ग्रामीणों के सहयोग से आवश्यक जगहों पर लगाये गये है।

इस वर्ष संस्था के द्वारा 2100 पेड़ पौधे वितरण किये जा चुके हैं तथा बारिश के मौसम में लगभग 2100 और वितरण किये जायेंगे। पेड़ वितरण में सिरोही सरपंच जयप्रकाश कस्वा , कविता सामोता, नगेन्द्र महावा, दीपक शर्मा, जयचंद रोहिलाण, अशोक मिठारवाल, विरेन्द्र शेखावत, तेजपाल अठावाल, विनय धरड़, सतीश काजला, लोकेश ताखर, शीशराम सेवग, मनोज गुर्जर, धर्मपाल, यश स्वामी, श्रीराम लांबा ने भी संस्था को पेड़ वितरण में सहयोग दिया।

नगर परिषद ने पॉलीथिन जब्त कर जुर्माना लगाया

भीलवाड़ा में पुलिस ने प्लास्टिक विक्रय करने वाले दुकानदारों के खिलाफ छापेमार कार्रवाई कर प्लास्टिक की थैलियां जब्त की।

भीलवाड़ा, (निसं)। 1 जुलाई से देशभर में पूर्ण रूप से बैन की गई सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ नगर परिषद ने सोमवार को अभियान की शुरुआत करते हुए प्लास्टिक विक्रय करते दो दुकानदारों के यहां छापेमारी करते हुए 65 किलो प्लास्टिक की थैलियां जब्त की हैं। दोनों पर 32 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया गया है। इस कार्यवाही से प्लास्टिक की थैलियों का कारोबार करने वाले व्यापारियों में हडकंप मच गया।

- **दोनों दुकानदारों पर 32 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया**

जानकारी के अनुसार नगर परिषद के दस्ते ने सोमवार सुबह छीपा बिल्डिंग के नजदीक नागौरी प्लास्टिक पर छापा मारा जहां 40 किलो प्रतिबंधित प्लास्टिक की थैलियां मिलीं। परिषद के अधिशासी अभियंता अखेराम बगडोदिया ने 11 हजार रुपए का जुर्माना किया। बाद में यह टीम इंदिरा मार्केट पहुंची जहां ब्यावर वाले हलवाई के सामने वर्धमान प्लास्टिक की तलाशी लेने पर वहां 25 किलो प्रतिबंधित प्लास्टिक की थैलियां मिली।

जेईई–मेन जून सैशन के 16 सवालों के जवाब पर आपत्ति

कोटा, (निसं)। एनटीए द्वारा आयोजित जेईई–मेन जून के प्रश्नपत्र, आंसर की और रिकॉर्डेड रेस्पांस जारी कर दिए गए स्टूडेंट्स ने अपने रिकॉर्डेड रेस्पांस और आंसर की का मिलान किया।

स्टूडेंट्स की कई सवालों पर आपत्तियां भी रही। इन सवालों के जवाबों को लेकर स्टूडेंट्स ने एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट के सब्जेक्ट एक्सपर्ट्स से चर्चा की और उसके बाद ऐसे सवालों के जवाब सामने आए जिसमें एनटीए और एलन के एक्सपर्ट्स और स्टूडेंट्स की राय अलग थी। एलन कॅरियर इंस्टीट्यूट के निदेशक डॉ. बृजेश माहेश्वरी ने बताया कि शनिवार रात्रि एनटीए द्वारा 29 जून को आयोजित अंतिम दिन की जेईई मेन परीक्षा की गलत आंसर की जारी कर दी गई थी। ऐसे में स्टूडेंट्स को परेशानी का सामना करना पड़ा। इसके बाद एनटीए ने रविवार दोपहर संशोधित आंसर की जारी की। एनटीए ने आंसर की पर आपत्ति दर्ज कराने के लिए स्टूडेंट्स को सोमवार शाम 5 बजे तक का समय दिया था। डॉ माहेश्वरी ने बताया कि 7 दिनों में 14 पारियों में हुई परीक्षाओं में 9 सवालों के जवाब ऐसे थे जिनके एलन के जवाब कुछ और थे और एनटीए द्वारा जारी की गई आंसर की में जवाब कुछ और दिए गए थे। इसके अलावा कुल सात सवालों को बोनस अंक के लिए चैलेन्ज किया गया था। एलन एक्सपर्ट्स द्वारा प्रश्नपत्र का अध्ययन कर आंसर की तैयार की जा चुकी है। स्टूडेंट्स अपनी आंसर की का मिलान कर सकते हैं।

- **स्टूडेंट्स ने एलन एक्सपर्ट्स से चर्चा करने के बाद दर्ज कराई आपत्तियां**
- **सात सवालों को बोनस अंक के लिए चैलेन्ज किया**

सबसे ज्यादा आपत्तियां कैमिस्ट्री में :– स्टूडेंट्स ने सबसे ज्यादा आपत्तियां कैमिस्ट्री के पेपर में जताईं। विद्यार्थियों ने कुल नौ आपत्तियां दर्ज कराते हुए आंसर की को चैलेंज किया। जबकि दो प्रश्नों को बोनस अंकों के लिए चैलेंज किया है। 24 जून सुबह की पारी में सेक्शन बी में प्रेक्टिकल ऑर्गेनिक कैमिस्ट्री के प्रश्न को बोनस अंक के लिए चैलेंज किया है। शाम की पारी में सेक्शन बी में सॉल्युशन पर आधारित प्रश्न के आंसर को चैलेंज किया है। 25 जून शाम की पारी में सेक्शन ए में पीरियोडिक प्रोपर्टीज पर आधारित प्रश्न और 26 जून को सुबह की पारी में सेक्शन ए में पॉलीमर पर आधारित प्रश्न व शाम की पारी में सेक्शन बी में केमिकल बॉन्डिंग के प्रश्न व 27 जून सुबह की पारी में सेक्शन बी में स्टीरियोआईसोमेरिज्म पर आधारित प्रश्न, शाम की पारी में सेक्शन बी में इलेक्ट्रोकैमस्ट्री पर आधारित प्रश्न के आंसर को चैलेंज किया है। 29 जून शाम की पारी में सेक्शन ए में सरफेस कैमिस्ट्री के प्रश्न को बोनस अंक व सेक्शन बी में आइसोमेरिज्म के प्रश्न के आंसर को चैलेंज किया है।

मैथ्स व फिजिक्स में ये आपत्तियां :– 24 जून सुबह की पारी में फिजिक्स के पेपर में सेक्शन ए में इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वेव्ज पर आधारित प्रश्न को बोनस अंक के लिए चैलेंज किया है। जबकि शाम की पारी में सेक्शन बी में मॉडर्न फिजिक्स पर आधारित प्रश्न को चैलेंज किया गया। वहीं 26 जून शाम की पारी में सेक्शन ए में केटीजी पर आधारित प्रश्न को बोनस अंक के लिए चैलेंज किया है। 28 जून को शाम की पारी में सेक्शन ए में इलेक्ट्रोमैग्नेटिक इंडक्शन पर आधारित प्रश्न के आंसर को चैलेंज किया है। जबकि 25 जून को सुबह की पारी में सेक्शन बी में बाइनोमियल थ्योरम पर आधारित प्रश्न व 27 जून शाम की पारी में सेक्शन ए में डेफिनेट इंटीग्रेशन पर आधारित प्रश्नएवं 29 जून को शाम की पारी में सेक्शन बी में वेक्टर्स पर आधारित प्रश्न को बोनस अंकों के लिए चैलेंज किया है।

राशिफल मंगलवार 5 जुलाई, 2022

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2079, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र दिन 10:30 तक, व्यतिपात योग दिन 12:13 तक, कौलव करण प्रातः 7:01 तक, चन्द्रमा सांय 4:52 से कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य–मिथुन, चन्द्रमा–सिंह, मंगल–मेष, बुध–मिथुन, गुरू–मीन, शुक्र–वृष, शनि–कुम्भ, राहु–मेष, केतु–तुला राशि में।

आज रवियोग दिन 10:30 तक और त्रिपुष्कर योग रात्रि 7:29 से सूर्योदय तक है। बुध अस्त पूर्व में सांय 5:35 पर होगा। आज कुमार षष्ठि व्रत, कसुम्बा और कर्दभ षष्ठि, व्यतिपात पूण्य, श्री महावीर स्वामी गर्भ कल्याणक (जैन) है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:07 से 10:49 तक। लाभ–अमृत 10:49 से 2:14 तक, शुभ 3:52 से 5:38 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:42, सूर्यास्त 7:21

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

वृष
परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव–प्रभुत्व बढ़ेगा।

कर्क
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगा।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि का भय है। अनावश्यक धन खर्च होगा। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

तुला
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। परिवार में शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। परिवार में वाद–विवाद टालना ठीक रहेगा।

कुंभ
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।